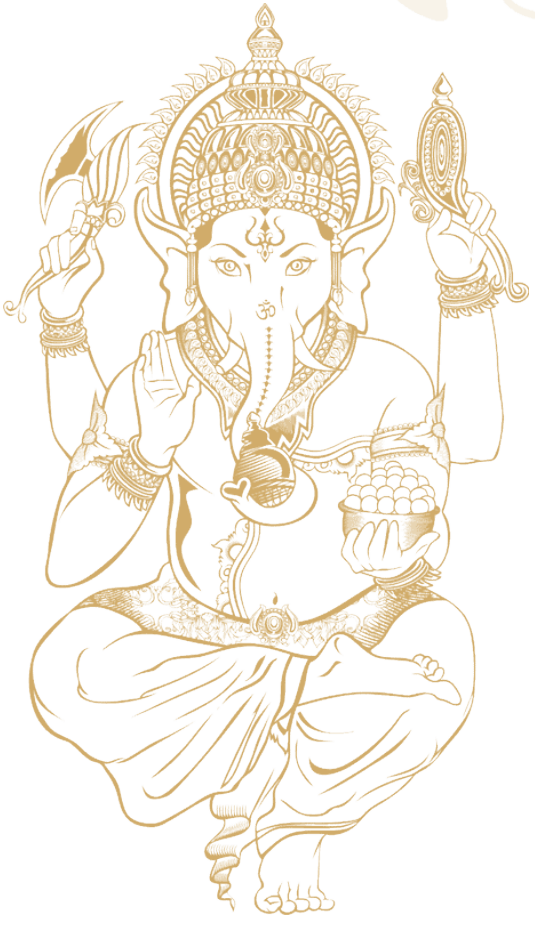

# Child

01 Aug 2025

11:48 AM

Pune

**Model: Baby-Horoscope** **Order No: 119025201**

**तिथि** 01/08/2025 **समय** 11:48:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Pune **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:56
**अक्षांश** 18:34:00 उत्तर **रेखांश** 73:58:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:34:08 घंटे

### पंचांग

| | |
|---|---|
| साम्पातिक काल | 07:54:20 घं |
| वेलान्तर | 00:06:21 घं |
| सूर्योदय | 06:11:47 घं |
| सूर्यास्त | 19:08:42 घं |
| चैत्रादि संवत | 2082 |
| शक संवत | 1947 |
| मास | श्रावण |
| पक्ष | शुक्ल |
| तिथि | 8 |
| नक्षत्र | स्वाति |
| योग | शुभ |
| करण | विष्टि |

### अवकहड़ा चक्र

| | |
|---|---|
| गण | देव |
| योनि | महिष |
| नाड़ी | अन्त्य |
| वर्ण | शूद्र |
| वश्य | मानव |
| वर्ग | मृग |
| युँजा | मध्य |
| हंसक | वायु |
| जन्म नामाक्षर | रे-रेवती |
| पाया(रा.-न.) | स्वर्ण-रजत |
| होरा | मंगल |
| चौघड़िया | काल |

### विंशोत्तरी

**राहु 10वर्ष 7मा 0दि**

**राहु**

**01/08/2025**
**02/03/2036**

| | |
|---|---|
| | 00/00/0000 |
| | 01/08/2025 |
| शनि | 13/02/2026 |
| बुध | 01/09/2028 |
| केतु | 20/09/2029 |
| शुक्र | 19/09/2032 |
| सूर्य | 14/08/2033 |
| चन्द्र | 13/02/2035 |
| मंगल | 02/03/2036 |

### योगिनी

**पिंगला 1वर्ष 2मा 3दि**

**पिंगला**

**01/08/2025**
**05/10/2026**

| | |
|---|---|
| | 00/00/0000 |
| | 00/00/0000 |
| | 00/00/0000 |
| | 01/08/2025 |
| उल्का | 14/11/2025 |
| सिद्धा | 05/04/2026 |
| संकटा | 14/09/2026 |
| मंगला | 05/10/2026 |

| ग्रह | व | अ | अंश | राशि | नक्षत्र | पद | स्वामी | अं. | स्थिति | षट्बल | चर | स्थिर | ग्रह तारा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | 02:46:38 | तुला | चित्रा | 3 | मंगल | शुक्र | --- | 0:00 | | | |
| सूर्य | | | 15:03:30 | कर्क | पुष्य | 4 | शनि | गुरु | मित्र राशि | 1.98 | अमात्य | पितृ | विपत |
| चंद्र | | | 12:09:31 | तुला | स्वाति | 2 | राहु | शनि | सम राशि | 0.85 | मातृ | मातृ | जन्म |
| मंगल | | | 02:14:50 | कन्या | उ०फाल्गुनी | 2 | सूर्य | गुरु | शत्रु राशि | 1.11 | कलत्र | भ्रातृ | वध |
| बुध | व | अ | 14:35:27 | कर्क | पुष्य | 4 | शनि | राहु | शत्रु राशि | 1.07 | भ्रातृ | ज्ञाति | विपत |
| गुरु | | | 17:33:12 | मिथु | आर्द्रा | 4 | राहु | सूर्य | शत्रु राशि | 1.15 | आत्मा | धन | जन्म |
| शुक्र | | | 07:03:18 | मिथु | आर्द्रा | 1 | राहु | राहु | मित्र राशि | 1.13 | ज्ञाति | कलत्र | जन्म |
| शनि | व | | 07:24:55 | मीन | उ०भाद्रपद | 2 | शनि | केतु | सम राशि | 1.01 | पुत्र | आयु | विपत |
| राहु | | | 24:51:20 | कुंभ | पू०भाद्रपद | 2 | गुरु | बुध | मित्र राशि | | --- | ज्ञान | सम्पत |
| केतु | | | 24:51:20 | सिंह | पू०फाल्गुनी | 4 | शुक्र | बुध | शत्रु राशि | | --- | मोक्ष | साधक |

## लग्न-चलित

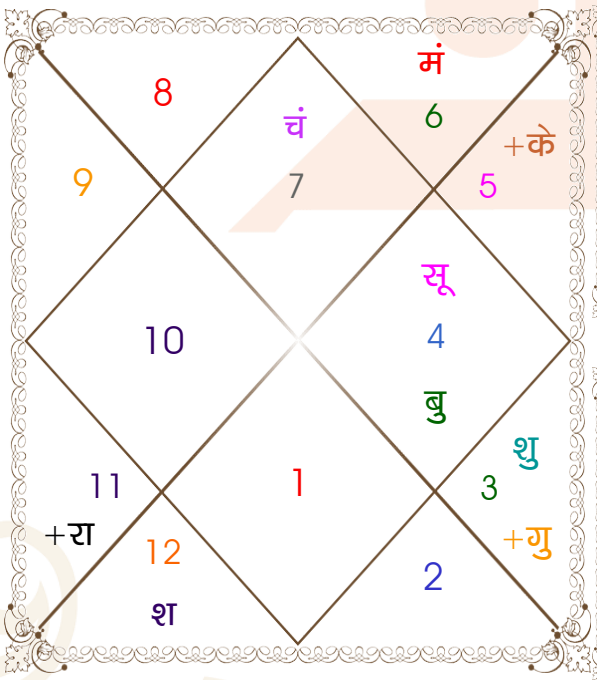


## चन्द्र कुंडली

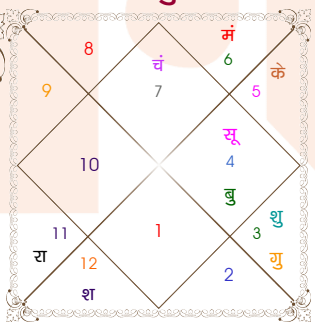


## नवमांश कुंडली

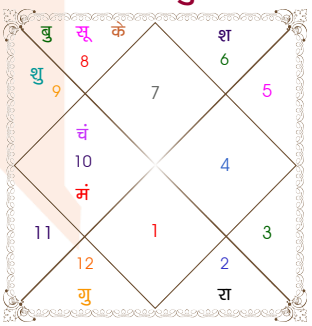


## सर्वाष्टकवर्ग

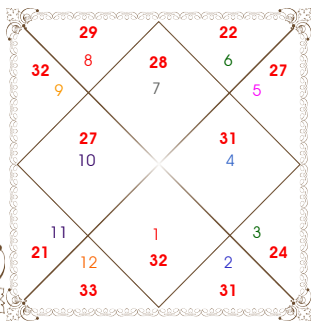


## दशमांश कुंडली

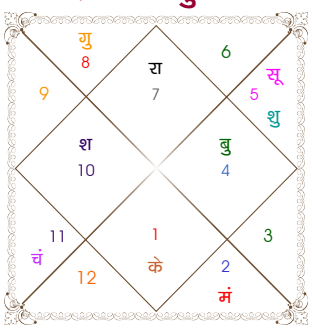


**Kaalsutrabhishekam**
Taranagar, Massipirhi
+917739395656
Kaalsutrabhishekam@gmail.com

# नक्षत्रफल

आप स्वाती नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशिस्वामी शुक्र होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "रे" से प्रारम्भ होगा।

आप स्वभाव से ही सहनशील होंगे तथा सुख दुःख का समान रूप से अनुभव करेंगे। आप प्रसन्नता के अवसर पर अनावश्यक प्रसन्नता तथा दुःख के अवसर पर अनावश्यक दुःख प्रदर्शित नहीं करेंगे। वाणिज्य कर्म के प्रति आप विशेष रूचि प्रदर्शित करेंगे तथा अपनी आजीविका यापन में इसी कार्य को वरीयता प्रदान करेंगे। आप कृपाकारक अर्थात् मन से दयालु होंगे तथा कृपापात्र लोगों के प्रति हमेशा दयाभाव प्रदर्शित करेंगे। इससे अन्य सामाजिक जन आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आप प्रारम्भ से ही धामिक प्रवृति के व्यक्ति रहेंगे तथा नियमपूर्वक धर्म का आचरण करने में सदैव तत्पर रहेंगे।

**दान्तो वणिक्कृपालु प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ।**
**बृहज्जातकम्**

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक क्लेश सहिष्णु, व्यापारी, कृपाकारक, मधुर वाणी बोलने वाला और धर्माचरण में तत्पर होता है।

देवताओं तथा ब्राहमणों के आप प्रिय कार्य करने वाले होंगे अर्थात् धर्मसंबंधी कार्यों को करते रहेंगे तथा इनके प्रति आपके हृदय में अगाध श्रद्धा की भावना विद्यमान रहेगी। संसार में आप विविध प्रकार के सुख ऐश्वर्य एवं वैभव का पूर्ण रूप से उपभोग करने में सफल दौरान आपकी- पास धन की कभी भी कमी नहीं होगी इससे आप सर्वदा परिपूर्ण रहेंगे। लेकिन आपकी बुद्धि मध्यम ही रहेंगी तथा तीक्ष्णता की सामान्यतया न्यूनता ही परिलक्षित होगी।

**स्वात्यां देवमहीसुरप्रियकरो भोगी धनी मन्द धीः।**
**जातकपरिजातः**

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता और ब्राह्मणों का प्रिय करने वाला, भोगी, धनी, किन्तु मन्द बुद्धि से युक्त होता है।

आप देखने में अत्यन्त ही रूपवान पुरूष होंगे तथा आपका मुखमंडल पूर्ण तेज से युक्त रहेगा। समाज में अन्य जनों से भी आपके प्रेमपूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण आदर प्राप्त होगा। इससे आपका मन हमेशा खुश रहेगा। साथ ही आप सरकारी धन को भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त करेंगे तथा सुखपूर्वक उसका उपभोग करेंगे।

**कन्दर्परूपः प्रभयासमेतः कान्तापरप्रीति रतिप्रसन्नः।**
**स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपति प्राप्त विभूतियुक्तः।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक कामदेव के समान सुन्दर रूप वाला, अनेक स्त्रियों से प्रीति रखने वाला, प्रसन्नचित तथा राजा से धन प्राप्त करने वाला होता है।

नाना प्रकार के शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक आप ज्ञानार्जन करने में प्रयत्नशील रहेंगे तथा समाज में एक विद्वान के रूप में यश प्राप्त करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी परन्तु अपने सामाजिक संबंधो की विस्तृता के कारण आप अन्य महिलाओं से भी संबंध स्थापित करेंगे तथा इनके आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे। आपका स्वभाव सुशील तथा विनम्रता से युक्त रहेगा। देवताओं के आप भक्त होगे पर प्रकृति आपकी कृपणता से युक्त रहेगी।

**विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणः प्रियवल्लभः।**
**सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः।।**
**मानसागरी**

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक विद्वान, धार्मिक, कृपण, अन्य स्त्रियों का प्रिय, सुशील एवं देवताओं का भक्त होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता हैं। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनो से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती हैं। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दयाभाव रहेगा। जीवन में समस्त प्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे। आप निर्भयता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके हृदय में नहीं रहेगा। आप में चतुराई तथा बुद्धिमता का भाव भी रहेगा एवं आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी तरह से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

तुला राशि में जन्म लेने के कारण आपका मुख तथा शरीर सुन्दर होगा। आपके नेत्र विशाल होंगे तथा नाक भी ऊंची होगी। आपके पास हमेशा विभिन्न प्रकार के वाहन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगे। आपके सामाजिक संबंध विस्तृत रहेगे तथा अन्य महिलाओं से भी आपके प्रेमपूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे। भूमि तथा वाहन आदि से आप पूर्ण बल तथा लाभ प्राप्त करने वाले होंगे। आप एक प्रतापी पुरूष होंगे तथा समाज में अपने पराक्रम के द्वारा पूर्ण प्रभाव को स्पष्ट करने में हमेशा समर्थ रहेंगे। धन ऐश्वर्य एवं वैभव से आप सम्पूर्ण रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इनका अपने जीवन काल में

उपभोग करेंगे। स्त्री के आप पूर्ण वश में रहेंगे तथा अपने समस्त कार्यकलापों को उससे परामर्श लिए बिना सम्पन्न करने में अपने आपको असमर्थ सा महसूस करेंगे। साथ ही कार्यों को करने में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के आप प्रिय भक्त होंगे। साथ ही धनधान्य को संग्रह करने की प्रवृति भी आपमें विद्यमान रहेगी तथा बन्धु वर्ग के उपकार संबंधी कार्यों को आप हमेशा करते रहेंगे तथा उन्हें अपनी तरफ से कुछ न कुछ प्रदान करते रहेंगे।

**उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।**
**गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।**
**भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।**
**धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।**
**सारावली**

आप समाज में देवता ब्राहमण तथा सज्जनों की सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे तथा पांडित्य पूर्ण पवित्र जीवन निर्वाह करते रहेंगे। आपकी भ्रमण में अधिक रूचि रहेगी तथा आपका काफी समय यात्रादि में व्यतीत होगा। आप खरीदने बेचने के कार्य में अत्यन्त ही दक्ष होंगे। आप अपने बन्धु तथा संबंधियों की मन से भलाई करेंगे परन्तु बाद में इन्हीं लोगों के द्वारा आपको उपेक्षित भी होना पड़ेगा।

**देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।**
**प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।**
**हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।**
**बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।**
**बृहज्जातकम्**

आप एक धैर्यशाली पुरूष होंगे तथा धैर्यपूर्वक ही अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आप एक न्याय प्रिय व्यक्ति होंगे तथा इस बात की आपकी सभी लोग प्रशंसा करेंगे तथा आपकी न्याय के प्रति ईमानदारी को देखते हुए आपको अपने वाद विवादों को सुलझाने के लिए मध्यस्थ या पंच बनाएंगे। आप भी अपनी इस जिम्मेदारी का ईमानदारी के साथ पूर्ण पालन करेंगे तथा किसी को शिकायत का अवसर प्रदान नहीं करेंगे। आपकी पुत्र संतति भी अल्प संख्या में होगी तथा भाग्योदय भी देर से ही होगा।

**चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।**
**प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।**
**फलदीपिका**

आपका कद मध्यम रहेगा तथा राज्य के उच्चाधिकारियों तथा पदाधिकारियों को प्रसन्न करने में आप निपुण होंगे। इनसे आप पूर्ण सहयोग भी प्राप्त करेंगे। कभी कभी आप अधिक तथा अनावश्यक बोलेंगे अतः आपके प्रभाव में कमी होगी।

**भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।**
**जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।**

**अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।**
**भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।**
**जातक दीपिका**

कभी कभी आप प्रतिकूल समय में अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगे जिससे आपको दुःख या कष्ट की प्राप्ति होगी। आप अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय वाणी को बोलेंगे जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपके मन में दया एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल इसका आप प्रदर्शन करेंगे। साथ ही आपके नेत्रों में भी चंचलता का भाव भी विद्य मान रहेगा परन्तु जीवन में आथिक स्थिति आपकी अस्थिर रहेगी एवं कभी अत्याधिक धन प्राप्त होगा तो कभी अति अल्प। इससे आपकी आथिक स्थिति विषम रहेगी। आप घर के अन्दर बलवान तथा बाहर निर्बलता की अनुभूति करेंगे। मित्र एवं बन्धुओं के प्रति आप स्नेहशील रहेंगे एवं विदेश में भी निवास कर सकेंगे। आपकी व्यापारिक कार्यों में रूचि रहेगी तथा दक्षतापूर्वक अपने कार्यों को पूर्ण करेंगे।

**अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।**
**चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।**
**वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।**
**प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।**
**मानसागरी**

आप नाना प्रकार के वाहनों से हमेशा युक्त रहेंगे तथा दानशीलता का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। स्त्री वर्ग के आप अत्यन्त प्रिय होंगे तथा उनसे पूर्ण सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगे। जीवन में आप बहुत धनवैभव से युक्त होकर इसका उपभोग करेंगे।

**वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।**
**शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।**
**जातकाभरणम्**

आपका जन्म देवगण में हुआ हैं। अतः आपकी वाणी अत्यन्त ही सुकोमल तथा मधुरता से युक्त रहेगी जो लोगों को प्रसन्नता प्रदान करेंगी। आपकी बुद्धि सरल एवं निर्मल होगी। किसी भी प्रकार के छल से दूर रहेंगे। अपनी बातों को आप सादगी पूर्ण ढंग से प्रस्तुत करेंगे तथा अन्य जनों की बातों को भी सादगी से ही ग्रहण करेंगे। आप अल्प मात्रा में भोजन करने के शौकीन रहेंगे गुणों के विषय में आपको ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी आदर्श गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त धन वैभव से भी आप आजीवन सुसम्पन्न रहेंगे।

आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा साथ ही दानशीलता की ओर भी आपकी प्रवृति रहेगी। आप बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सादगी आपको अत्यन्त पसन्द रहेगी। भौतिकता की आप यत्नपूर्वक उपेक्षा करेंगे। आप अपने समाज में एक आदरणीय विद्वान के रूप में यश की प्राप्ति करेंगे।

**सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।**

**जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

महिष योनि में जन्म लेने के कारण आप वादविवाद आदि में अधिकांश रूप से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आप स्वयं भी साहसी एवं योद्धा होंगे तथा साहसिक कार्यों को करने की ओर स्वभाव से ही प्रवृत रहेंगे। आपकी संतति अधिक संख्या में होगी। आप के शरीर में वायु की प्रधानता होगी। धार्मिक कार्यों में भी आपकी रूचि समयानुसार जागृत रहेगी परन्तु बुद्धि में तीव्रता का अभाव रहेगा तथा मध्यम बुद्धि ही आपकी रहेगी।

**संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।**
**वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।**
**मानसागरी**

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा

सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्लयोग, तैतिलकरण, गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियां, शतमिषा नक्षत्र, शुक्लयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण आदि कार्यो को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यों में वजित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में आपको सफलता प्राप्त नही हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, दूध इत्यादि पदार्थो को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शारीरिक व्याकुलता में भी न्यूनता आऐगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभप्रभावों में वृद्धि होगी। कत शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 1700 जप

**ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।**
**मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।**